DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

साहित्य

रघुवंशम्

LIVE 04-07-2024 05:00 PM

रघुवंशम् (महाकाव्य)

- 19 सर्ग
- श्लोक 1569
- कालिदास
- 31 सूर्यवंशी राजाओं का पराक्रम एवं जीवनवर्णित

प्रथम सर्ग (1-25 पद्य)

रघुवंश महाकाव्य का परिचय

रघुवंश महाकाव्य उन्नीस सर्गों में विभक्त है। इसमें 1569 श्लोक हैं। इस महाकाव्य में सूर्यवंश के 31 राजाओं के शौर्य तथा जीवन का वर्णन है। अत्यन्त प्रतापी तथा दयालु राजा मनु से लेकर परमविलासी राजा अग्निवर्ण तक की कथा रघुवंश में संकलित है। रघुवंश महाकाव्य का मूल स्रोत रामायण है किन्तु रघुवंश की कथा पद्मपुराण के अधिक समीप है। रघुवंश महाकाव्य की कथा राजा दिलीप के चरित्र चित्रण से आरम्भ होती है।

दिलीप अत्यन्त प्रतापी और पराक्रमी राजा थे किन्तु उनके कोई सन्तान नहीं थी। सन्तान प्राप्ति की कामना से वे अपनी पत्नी सुदक्षिणा के साथ गुरू वशिष्ठ के पास जाते हैं तथा गुरूप्रवर के आदेशानुसार कामधेनु की पुत्री नन्दिनी (गौ) की सेवा का व्रत लेते हैं। राजा दिलीप पत्नी सुदक्षिणा के साथ नन्दिनी की सेवा करते हुए कई महीने व्यतीत कर देते हैं एक दिन नन्दिनी राजा की परीक्षा लेने के उद्देश्य से पर्वत की कन्दराओं में प्रवेश कर जाती है और एक सिंह उस पर आक्रमण कर देता है।

सिंह से गाय को बचाने के लिए राजा स्वयं अपनी देह सिंह को अर्पित कर देते हैं राजा के इस त्याग से अभिभूत होकर नन्दिनी राजा को पुत्रप्राप्ति का वरदान देती है। इसके पश्चात् राजा के पराक्रम का वर्णन, राजा दिलीप के घर रघु का जन्म आदि कथाओं से सूर्यवंश आगे बढ़ता है। अन्त में सुदर्शन के पुत्र अग्निवर्ण की कामुकता तथा विलासिता से दु:खद मृत्यु होती है। रघुवंश कालिदास की उत्कृष्ट कृति है। पद-पद पर कवि की प्रतिभा स्फुट होती है। भाव, भाषा, रस तथा कला का अनुपम उदाहरण इस महाकाव्य में द्रष्टव्य है।

रघुवंश महाकाव्य नाम की सार्थकता तथा रघुवंश की वंश परम्परा

रघुवंश महाकाव्य के नाम से ही स्पष्ट है कि जिस वंश में राजा रघु हुए उनके वंश का वर्णनपरक है यह महाकाव्य। प्रथम सर्ग के आरम्भ में रघुवंश नाम की सार्थकता सिद्ध करते हुए कालिदास स्वयं लिखते हैं-

"रघूणामन्वयं वक्ष्ये"

इसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ भी स्पष्ट है- रघोः वंशः (रघु का वंश) रघूणां वंशः (रघुवंशियों का वंश), रघुवंशस्य वृत्तमस्तीत्यास्मिन् काव्ये तत् रघुवंशमिति (रघुवंश का वर्णन है जिस काव्य में वह रघुवंश महाकाव्य है), राजा दिलीप से प्रारम्भ करते हुए राजा राम का विस्तृत वर्णन है। सोलहवें सर्ग तक राम का वर्णन तथा अन्यान्य राजाओं का वर्णन संक्षेप में मिलता है। 18वें सर्ग में 21 राजाओं का उल्लेख है इस प्रकार रघुवंश मे कुल 31 राजाओं का वर्णन प्राप्त है

(1) राजा दिलीप (2) रघु (3) अज (4) दशरथ (5) राम (6) कुश (7) अतिथि (8) निषध (9) नल (10) नभ (11) पुण्डरीक (12) क्षेमधन्वा (13) देवानीक (14) अहीनग (15) पारियात्र (16) शील (17) उन्नाभ (18) वज्रनाभ (19) शङ्खण (20) व्युषिताश्व (21) विश्वसह (22) हिरण्यनाभ (23) कौशल्य (24) ब्रह्मनिष्ठ (25) पुत्रपुष्य (26) ध्रुवसन्धि (27) सुदर्शन (28) अग्निवर्ण। यहाँ राम के साथ लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न को जोड़कर कुल-31 राजाओं का वर्णन प्राप्त है। इस वंशक्रम को अधोलिखित चार्ट से आसानी से स्मरण किया जा सकता है-

रघुवंश में वर्णित राजाओं की सूची

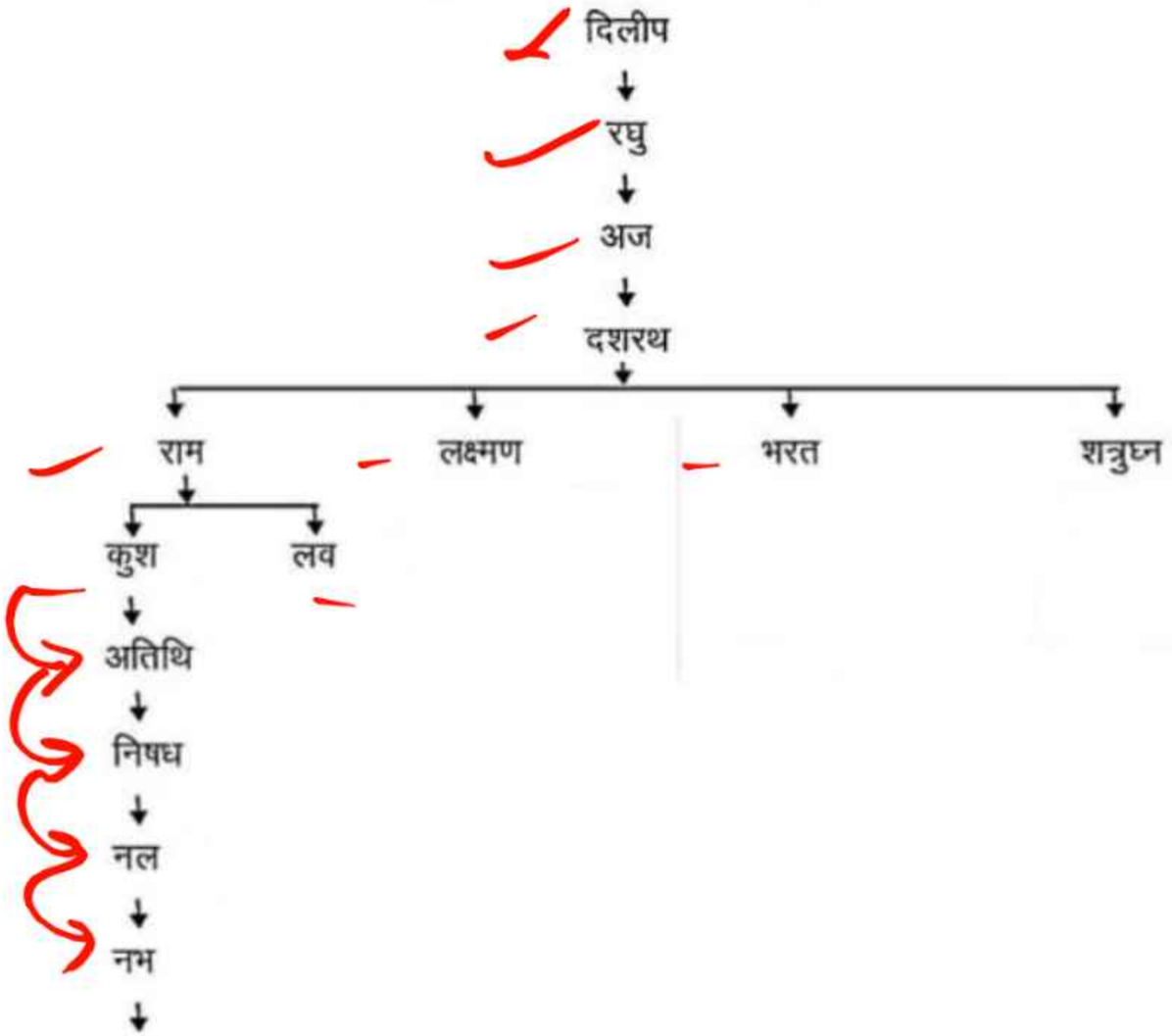

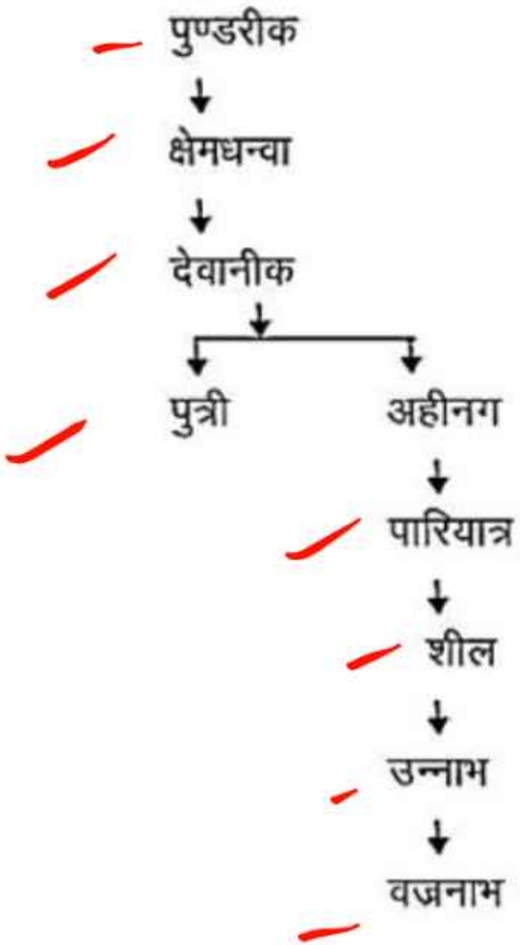
पुण्डरीक
क्षेमधन्वा
देवानीक
पुत्री
अहीनग
पारियात्र
शील
उन्नाभ
वज्रनाभ

रघुवंश में वर्णित राजाओं की सूची

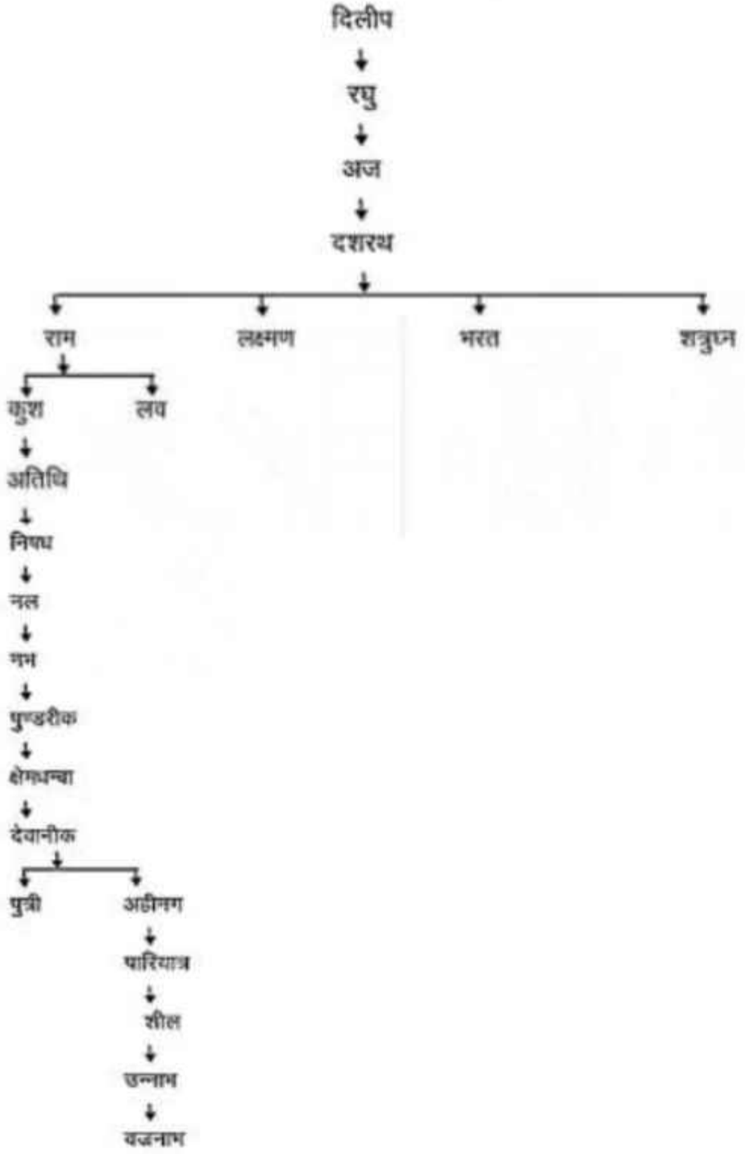

रघुवंशम्

↓

शङ्खण

↓

व्युषिताश्व

↓

विश्वसह

↓

हिरण्यनाभ

↓

कौशल्य (सोमसुत)

↓

ब्रह्मनिष्ठ

↓

पुत्र(पौष्य)

↓

ध्रुवसन्धि

↓

सुदर्शन

↓

अग्निवर्ण

रघुवंश का कथासार

रघुवंश महाकाव्य उन्नीस सगों में विभक्त है। इसमें महाकाव्य के सभी लक्षण घटित होते हैं। इक्ष्वाकुवंश के महाप्रतापी राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक सत्ताईस राजाओं का वर्णन इस महाकाव्य में किया गया है। रघुवंश का वर्णन वाल्मीकि रामायण, महाभारत तथा पद्मपुराण में प्राप्त है।

प्रथम सर्ग

महाकवि कालिदास शब्द और अर्थ के समान एकीभूत, सृष्टि के माता-पिता भगवान् शिव और पार्वती को वाणी और अर्थ की सिद्धि के लिये नमन करते हुए रघुवंश महाकाव्य का प्रारम्भ करते हैं। ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये मंगलाचरण करके स्वयं को रघुकुल जैसे महान् वंश का वर्णन करने में असमर्थ कहते हैं तथा लिखते हैं कि वाल्मीकि आदि महाकवियों ने सूर्यवंश पर काव्य की रचना करके वाणी का द्वार खोल दिया है तभी मैं अल्पमति इस वंश का वर्णन कर

पा रहा हूँ। वरना इतने उच्च कुल का वर्णन करना मेरे लिये ठीक वैसा ही है जैसे कि कोई व्यक्ति छोटी सी नौका से विशाल समुद्र को पार करने का प्रयास करता है।

वेदों में ऊँकार के समान इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं में सर्वप्रथम सूर्यपुत्र वैवस्वत मनु हुए। मनु के वंश में प्रखर मेधा, न्यायप्रिय और दयालु राजा दिलीप हुए। राजा दिलीप न्यायप्रिय, धर्मावलम्बी तथा सच्चरित्रवान् थे किन्तु उनके कोई सन्तान नहीं थी। रानी सुदक्षिणा को

लेकर आप गुरू वसिष्ठ के आश्रम पहुँचे। गुरू वसिष्ठ ने उन्हें कामधेनु की पुत्री नन्दिनी (गौ) की सेवा करने का निर्देश दिया।

जिस समय गुरू वसिष्ठ नन्दिनी की सेवा का निर्देश दे रहे थे उसी समय नन्दिनी वन से लौटकर आ गई। उसके खुर की धूल से राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा पवित्र हो गए। अपने बछड़े को देखते ही नन्दिनी के थनों से दूध बहने लगा।

गुरू वसिष्ठ ने राजा दिलीप से कहा- 'राजन्। नाम लेते ही नन्दिनी आ गई है तथा बहते दूध का दर्शन हुआ है यह अत्यन्त शुभ शकुन है आपका मनोरथ शीघ्र पूर्ण होगा। आज से आप दोनों इसका अनुकरण करो, इसकी सेवा करो। तभी से राजा दिलीप ने गौ सेवा व्रत की प्रतिज्ञा की।

द्वितीय सर्ग

प्रात:काल रानी सुदक्षिणा ने चन्दन व माला से नन्दिनी गौ की पूजा की और राजा दिलीप ने उसे वन में जाने के लिए खोल दिया। जिस प्रकार स्मृतियाँ श्रुति का अनुगमन करती हैं उसी प्रकार रानी सुदक्षिणा नन्दिनी का अनुसरण करने लगी। इक्कीस दिन प्रात:-सायं पूजा करते हुए गाय की अगुवाई करते हुए दम्पती गाय के सोने के बाद सोते तथा उसके जागने पर उसकी सेवा करते। बाईसवें दिन राजा दिलीप की परीक्षा लेने के लिये नन्दिनी पर्वत की कन्दराओं में घुस गयी और एक

शेर ने उस पर आक्रमण कर दिया। राजा दिलीप ने उस शेर से आग्रह किया कि नन्दिनी को छोड़ दे और उसे खा ले। सिंह ने अनेक प्रकार से राजा को नन्दिनी की रक्षा से विमुख करने का प्रयास किया किन्तु राजा तो दृढ़ थे उन्होंने कहा जिसकी रक्षा तथा सेवा के लिए गुरूजी ने मुझे आज्ञा दी है यदि उसकी रक्षा में प्राण भी चले जाएं तो उचित ही होगा। यह कहकर राजा ने सिंह के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया।

इस समर्पण से प्रसन्न होकर नन्दिनी ने राजा दिलीप को पुत्रप्राप्ति का वरदान दिया और पत्ते का दोना बनाकर उसमें दूध पीने का आदेश दिया। राजा ने बछड़े के दूध पीने के बाद तथा गुरूजी का हवन कार्य सिद्ध होने के पश्चात् दूध पिया। अगले दिन अपने व्रत का पारणा करके राजा दिलीप सुदक्षिणा के साथ अपनी राजधानी लौटे और शीघ्र ही सुदक्षिणा ने गर्भ धारण किया।

तृतीय सर्ग

गर्भ धारण करने से सुदक्षिणा दिन पर दिन कृशकाय होने लगी। राजा ने सुदक्षिणा की सखियों को यथोचित प्रबन्ध करने का निर्देश दिया। कालक्रम से सुदक्षिणा ने रघु को जन्म दिया। राजा दिलीप ने रघु का यज्ञोपवीत करके उसे युवराज बना दिया। राजा दिलीप ने सौ अश्वमेघ यज्ञ करने का संकल्प लिया। निन्यानवे अश्वमेघ यज्ञ सम्पन्न होने पर दिलीप ने अपने घोड़े को छोड़ा और इन्द्र उस घोड़े को लेकर लुप्त हो गए। रघु ने इन्द्र का पीछा करके घोड़ा छुड़वाना चाहा किन्तु इन्द्र से

जीत नहीं सका। उसके पराक्रम से प्रसन्न होकर इन्द्र ने रघु से वर मांगने को कहा। रघु ने कहा कि इस अश्व के आपके पास होने की सूचना मेरे पिता को प्राप्त हो जाए और सौ अश्वमेघ यज्ञ का फल मेरे पिता को प्राप्त हो जाए। राजा दिलीप अपने यज्ञ को पूर्ण करके वानप्रस्थ आश्रम चले जाते हैं।

चतुर्थ सर्ग

चतुर्थ सर्ग में महाराज रघु की दिग्विजय का वर्णन है। रघु ने दिग्विजय यात्रा प्रारम्भ की। जिन-जिन राजाओं को रघु जीतते जा रहे थे उन-उन राजाओं को पुनः वहीं का राजा बना देते थे जिससे रघु का मार्ग निष्कण्टक होता जा रहा था। पूर्व दिशा के राज्य तथा बंगाल के राज्यों को जीतते हुए रघु कलिंग, महेन्द्र पर्वत तथा वहाँ से दक्षिण भारत को जीतते हुए चारों और विजयी हुए। चारों दिशाओं को जीतकर रघु अपनी दिग्विजय यात्रा को पूर्ण कर राजधानी अयोध्या लौटे दिग्विजय के अनन्तर रघु ने विश्वजित् नामक यज्ञ प्रारम्भ किया।

पंचम सर्ग

विश्वजित् यज्ञ में दक्षिणा के रूप में रघु ने अपना सर्वस्व दान कर दिया तब वरतन्तु महर्षि के शिष्य मुनि कौत्स रघु से गुरूदक्षिणा लेने पहुँचे और चौदह विद्याओं की गुरुदक्षिणा में चौदह करोड़ स्वर्णमुद्राएँ मांगी। अगले दिन रघु ने कुबेर के यहाँ चढ़ाई करने की योजना बनाई। प्रात: काल खजाने में सुवर्ण वृष्टि हो गई। रघु ने सारा धन कौत्स को देना चाहा किन्तु कौत्स ने 14 करोड़ से एक भी अधिक मुद्रा लेने से मना कर दिया। कौत्स ने प्रसन्न होकर रघु को पुत्रप्राप्ति का वरदान दिया। रघु के यहाँ अज का जन्म हुआ, इन्दुमती स्वयंवर में अज को बुलाया गया।

षष्ठ सर्ग

इन्दुमती स्वयंवर का मनोरम दृश्य। स्वयंवर में उपस्थित सभी राजाओं और राजकुमारों का वर्णन अतिरोचक तरीके से किया गया है। इन्दुमती की सखी सुनन्दा इन्दुमती को उपस्थित राजाओं का परिचय करवाती है। जैसे ही इन्दुमती राजा अज के सम्मुख पहुँचती है अज की दक्षिण भुजा फड़कने लगती है। इन्दुमती वहीं रुक जाती है और सुनन्दा के हाथों से कुंकुम के चूर्ण से लाल धागे वाली स्वयंवर माला को रघुपुत्र अज के गले में डाल देती है।

सप्तम सर्ग

रघुपुत्र अज के द्वारा इन्दुमती का वरण करके जाते समय राजमार्ग पर अंगनाओं की विविध चेष्टाओं का विस्तृत वर्णन प्राप्त है। रति और कामदेव के समान अज और इन्दुमती सुशोभित हो रहे थे। मार्ग में स्वयंवर में हारे हुए राजाओं ने अज को घेर कर रोक लिया। अज ने उनका सामना किया और गन्धर्वराज प्रियंवद से प्राप्त निद्राकारक अस्त्र को फेंका जिससे सारे राजा व उनकी सेना निद्रामग्न हो गई और अज ने विजयबिगुल बजाया। इन्दुमती शर्म से झुककर अज के साथ अयोध्या आ गई। अज इन्दुमती के आने पर राजा रघु वानप्रस्थ हेतु प्रस्थान कर गए।

अष्टम सर्ग

अज विलाप

अज के राज्य में प्रवेश करते ही राज्य का सारा भार उन पर आ गया। राज्याभिषेक के बाद अज ने अपना राज्य बड़ी कुशलता से चलाया। अज में रघु के राज्योचित सारे गुण भी दिखाई दे रहे थे रघु का परलोकगमन और अज द्वारा और्ध्वदेहिक संस्कार का वर्णन। इन्दुमती ने एक वीर पुत्र को जन्म दिया जिसे दशरथ नाम दिया गया। अज इन्दुमती के साथ नन्दनवन में विहार कर रहे थे। वहाँ नारद की वीणा पर से गिरी पुष्पमाला के आघात से इन्दुमती मर जाती है। इस मृत्यु पर

अज का करुण विलाप अष्टम सर्ग का वैशिष्ट्य है महर्षि वसिष्ठ अपने शिष्य के साथ अज को सन्देश भेजते हैं और इन्दुमती के शाप के कारण पृथ्वी पर आने तथा स्वर्गपुष्प के स्पर्श से मुक्ति पाने का वृत्तान्त बताते हैं। इन्दुमती की मृत्यु के आठ वर्ष के बाद राजा अज भी परलोक चले गए।

नवम सर्ग

दशरथ ने अपने बाणों से शत्रुओं का सफाया कर दिया तथा उत्तर कोशल का राज्य बड़ी कुशलता से सम्भाला। दशरथ ने कौशल, मगध तथा कैकय देश की कन्याओं कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकेयी से विवाह किया। कुछ समय व्यतीत होने के बाद राजा दशरथ अपने योग्य मन्त्रियों के साथ आखेट खेलने वन में गए। अनेक दिन आखेट खेलने के बाद एक दिन मृग का पीछा करते हुए राजा दशरथ अपने समूह से बिछड़ गए। एक तालाब के किनारे का प्रसंग है। श्रवणकुमार

अपने अन्धे माता-पिता को तीर्थ ले जा रहा था। जल पीने के लिये श्रवण तालाब पर जल भर रहा था। दशरथ ने भूलवश कोई जंगली पशु जानकर शब्दभेदी बाण से उसे मार डाला। श्रवण के मरने से पुत्र वियोग में उसके माता-पिता भी दशरथ को पुत्रवियोग में मरने का शाप देकर मर गए।

दशम सर्ग

राजा दशरथ पुत्र प्राप्ति की कामना से पुत्रेष्टि यज्ञ करते हैं। दूसरी ओर देवगण राक्षरा रावण के अत्याचारों से खिन्न होकर भगवान् विष्णु के पास जाते हैं। विष्णु भगवान् खीर का कटोरा लेकर दशरथ के यहाँ प्रस्तुत होते हैं दशरथ की तीनों रानियों की कोख से राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न (खीर के प्रभाव से विष्णु के अंशावतार रूप) का जन्म होता है। अयोध्या में हर्षोत्सव मनाया गया। चारों राजकुमारों का जातकर्म संस्कार किया गया। वेदाध्ययन हेतु चारों राजकुमार गुरू वसिष्ठ जी के आश्रम में ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्याभ्यास करने लगे।

एकादश सर्ग

विश्वामित्र राजा दशरथ से यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को मांगते हैं। ऋषि विश्वामित्र के साथ जाते हुए मार्ग में ताड़का नाम की राक्षसी मिलती है। राम अपने पराक्रम से उसे पराजित कर देते हैं। फिर आश्रम पहुँचकर राम ने अन्य राक्षसों को भी मार गिराया। मिथिला में राजा जनक के यहाँ धनुषयज्ञ का आयोजन हुआ। विश्वामित्र अपने दोनों शिष्यों राम व लक्ष्मण के साथ वहाँ पहुँचे। राम ने शिवजी का धनुष तोड़ दिया और सीताजी ने राम के गले में जयमाला डाल दी। विधि-विधान सहित विवाह सम्पन्न किया गया।

द्वादशसर्ग

राजा दशरथ ने राम के राज्याभिषेक की घोषणा की। माता कैकेयी ने देवासुर संग्राम के समय राजा दशरथ के प्राणों की रक्षा के बदले दो वर प्राप्त किये थे। उनमें से प्रथम वर तो कैकेयी ने राम के लिये चौदह वर्ष का वनवास मांगा और द्वितीय में अपने पुत्र भरत को राजगद्दी दिये जाने का वर मांगा। राम ने सहर्ष वनगमन स्वीकार किया। राजा जनक पुत्र वियोग में विलाप करते हुए परलोक चले गए। भरत ने ननिहाल से लौटकर सम्पूर्ण वृत्तान्त सुना तो अग्रज राम को लेने वन में गए। राम ने उन्हें समझाकर वापस भेज दिया।

अत्यधिक आग्रह पर अपनी चरण पादुका भरत को दे दी। इधर वन में शूर्पनखा के अभद्र आचरण के कारण लक्ष्मण ने उसके नाक व कान काटकर उसे कुरूप बना दिया। रावण ने अपनी बहन के अपमान का बदला लेने के लिये छल से सीताहरण कर लिया।

राम ने रावण का वध करके लंका की गद्दी पर विभीषण को बैठाया और पुष्पक विमान पर बैठकर अयोध्या लौट आए।

त्रयोदश सर्ग

राम ने सीता की अग्निपरीक्षा ली। अयोध्या लौटते समय माल्यवान पर्वत तथा पम्पासरोवर का सुन्दर वर्णन किया। लंका से विजय प्राप्त कर सीता के साथ लौटते समय राम सीता को मार्ग में आने वाले स्थलों को दिखाकर याद दिला रहे हैं कि किन-किन स्थलों पर रुककर राम ने सीता की खोज की तथा क्या-क्या योजनाएँ बनाई थीं। भरत मन्त्रियों के साथ अर्घ्यपात्र लेकर राम की अगुवाई करने आते हैं। राम सुग्रीव तथा विभीषण का परिचया भरत से करवाते हैं। भरत उन दोनों का भी अभिवादन तथा सत्कार करते हैं। श्री राम की शोभायात्रा अयोध्या की ओर बढ़ती है।

चतुर्दश सर्ग

मार्ग में अयोध्या के उपवनों में विश्राम करने के बाद उपवन में ही कौशल्या और सुमित्रा माता राम, लक्ष्मण और जानकी से मिलने आयीं। राजमहल आने पर शुभ मुहूर्त में श्री रामा का राज्याभिषेक किया गया। इसके बाद राम ने स्वयं माता कैकेयी के पास जाकर अपने मधुर वचनों से उनके संकोच को दूर किया। श्रीराम ने पर्याप्त सत्कार कर सुग्रीव व विभीषणा को भी विदा किया। सीता गर्भिणी हो गई।

तभी राम ने सीता के लोकोपवाद की चर्चा सुनी सीता ने गर्भिणी मनोरथ में गंगातटवर्ती तपोवन देखने की इच्छा व्यक्त की। राम ने इसी मनोरथपूर्ति के व्याज से लक्ष्मण से सीता को वाल्मीकि मुनि के आश्रम के पास छोड़ आने का आदेश दिया। वन में यह परित्याग जानकर सीता करुण विलाप करने लगी। मुनि वाल्मीकि उन्हें आश्रम ले आए। गर्भिणी सीता मुनि कुमारियों के साथ रहने लगी। राम भी सीता का परित्याग करके अत्यन्त दुःखी थे। अश्वमेघ यज्ञ में भी राम ने सीताजी की स्वर्णमयी प्रतिमा को ही साथ में बिठाया।

पंचदश सर्ग

लवणासुर नामक राक्षस के उपद्रवों के कारण यमुना तटवर्ती तपस्विजन खिन्न थे। राम से सहायता मांगने उपस्थित होने पर राम ने शत्रुघ्न को इस संकट को दूर करने भेजा। शत्रुघ्न मार्ग में वाल्मीकि मुनि के आश्रम में विश्राम के लिये रुके। उसी रात सीता माता ने लव और कुश को जन्म दिया। शत्रुघ्न ने आगे बढ़कर लवणासुर का वध करके तपस्वियों की तप:स्थली को सुरक्षित किया। महर्षि वाल्मीकि ने लव और कुश के समस्त संस्कार पूरे विधि-विधान से किये तथा बड़े

होने पर उन्हें वेदांग पढ़ाया और स्वरचित रामायण का गान भी करवाया।

शम्बूक नामक शूद्र के इन्द्र पद पाने की लालसा में तप करने का प्रयास करने पर अनधिकार चेष्टा के कारण पाप फैल गया। जिसकी वजह से अयोध्या में एक ब्राह्मणपुत्र की अकाल मृत्यु हो गई। राम ने यह सत्य खोजकर शम्बूक का सिर धड़ से अलग कर दिया। ब्राह्मणपुत्र पुनर्जीवित हो उठा। लव-कुश रामकथा सुनाने के लिये राम के दरबार में उपस्थित हुए।

वाल्मीकि ने कहा महाराज अब सीता को स्वीकार करो। राम ने सीता से अपनी पवित्रता सिद्ध करके महल वापस आने को कहा तो सीता ने राजसभा में धरती माता को प्रणाम करके कहा यदि मैं पतिव्रता हूँ और पवित्र हूँ तो मुझे अपनी गोद में ले लो और सीता धरती में समा गई। राम भी स्वर्गलोक को चले गए।

षोडश सर्ग

रघुवंश के समस्त राजकुमारों ने अग्रज कुश को अपना उत्तराधिकारी बनाया। एक दिन स्वप्न में कुश ने देखा कि एक स्त्री उनसे अयोध्या में निवास करने का निवेदन कर रही है। अयोध्या आकर बड़े-बड़े याज्ञिक अनुष्ठान करके कुश ने यज्ञस्तूप गाड़ दिये और अयोध्या में राज करने लगे। कुश के प्रयासों से धीरे-धीरे अयोध्या का सौन्दर्य बढ़ने लगा। एक बार जल क्रीडा करते समय कुश के हाथ से जैत्र नामक आभूषण जो कि अगस्त्य ऋषि ने श्रीराम को व श्रीराम ने कुश को दिया था जल

में गिर गया। बहुत ढूंढने पर भी न मिलने पर कुश ने अपना धनुष चढ़ाया कि जल में जो नाग रहते हैं उन्होंने उसे छिपा लिया हो तो मैं उन्हें मार कर जैत्र वापस ले लेता हूँ।

तभी जल से नागराज कुमद् आए और वह आभूषण सौंपकर अपनी कन्या कुमुद्धत्ती से विवाह का प्रस्ताव रखा। कुश का कुमुद्धती से विवाह हुआ।

सप्तदश सर्ग

राजा कुश और रानी कुमुद्वती के पुत्र अतिथि हुए। समस्त विद्याओं का ज्ञान प्राप्त कर अतिथि योग्य शासक बने। उसका विवाह करके कुश ने अतिथि का राज्याभिषेक किया। कुश का इन्द्र की सहायतार्थ शामिल हुए एक युद्ध में वध हो गया। सप्तदश सर्ग में अतिथि का सुयोग्य शासक तथा पराक्रमी होना वर्णित है। अतिथि के राज्य में सर्वत्र सुख-शांति- सम्पन्नता और खुशियाँ व्याप्त थीं। अतिथि ने अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ में जिन ब्राह्मणों ने सहयोग किया उन सभी का सत्कार अतिथि ने कुबेर के समान किया।

अष्टादश सर्ग

निषध देश की राजकुमारी राजा अतिथि की रानी थी। उनके एक अत्यन्त तेजस्वी और वीर पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम निषध रखा गया। निषध भी अपने पिता के समान पराक्रमी योद्धा बना। समुद्रपर्यन्त व्याप्त पृथ्वी तक उसने अपना राज्य फैलाया। निषध के पुत्र राजा नल हुए। नल के नभ नाम का योग्य पुत्र हुआ। नभ के पुण्डरीक नाम का पुत्र हुआ। पुण्डरीक के क्षेमधन्वा नाम का पुत्र हुआ। क्षेमधन्वा से देवानीक का जन्म हुआ। देवानीक का पुत्र अहीनग,

अहीनग के शील, शील के उन्नाभ, उन्नाभ के वज्रनाभ, वज्रनाभ के शंखण, शंखण के पुत्र अश्विनी कुमार (व्युषिताश्व), व्युषिताश्व के विश्वसह, विश्वसह के हिरण्यनाभ, हिरण्यनाभ के कौशल्य, कौशल्य के वसिष्ठ, वसिष्ठ के शिरोमणि, शिरोमणि के पुन्न, पुन्न के पुष्य, पुष्य के पुत्र ध्रुवसन्धि, ध्रुवसन्धि के पुत्र सुदर्शन हुए। इस प्रकार 18वें सर्ग में इक्कीस राजाओं का वर्णन प्राप्त होता है।

ऊनविंश सर्ग

तेजस्वी राजा सुदर्शन के अग्निवर्ण नाम का पुत्र हुआ। सुदर्शन ने अग्निवर्ण को राजगद्दी पर बैठाया और स्वयं नैमिषारण्य में रहने लगे। वानप्रस्थ का नियमपूर्वक पालन करते हुए सुदर्शन धार्मिक कृत्य कर रहे थे। दूसरी तरफ अग्निवर्ण कुछ समय पश्चात् राज काज का भार मन्त्रियों पर छोड़कर स्वयं कामुक का जीवन व्यतीत करने लगा। समय के प्रभाव के कारण राजा क्षय रोग से पीड़ित हो गया।

राजा की मृत्यु के बाद मन्त्रियों ने राजभवन के उपवन में ही राजा की देह को पंचतत्त्व में विलीन करवा दिया और गर्भिणी महारानी को पुत्र प्राप्ति तथा पुत्र के युवा होने तक राजगद्दी पर बिठा दिया। महारानी मन्त्रियों से मन्त्रणा करते हुए राजकाज व्यवस्थित रूप से चलाती रही और उसका पुत्र ही रघुवंश का अन्तिम राजा हुआ।

काव्यांश की व्याख्या

मंगलाचरण

वागर्थाविव + इव

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥1॥

प्रसंग- किसी भी ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये तथा पाठकों, अध्यापकों एवं व्याख्याकारों के कल्याण के लिये तथा शिष्यों की शिक्षा के लिये कवि अपने काव्य के प्रारम्भ में मंगलाचरण के रूप में अपने इष्ट देवता की आराधना करते हैं। उक्त श्लोक में महाकवि कालिदास ने भगवान् शिव व पार्वती को प्रणाम किया है। यह ग्रन्थ का मंगलाचरण श्लोक है।

अन्वय: - (अहं) वागर्थौ इव सम्पृक्तौ जगतः पितरौ पार्वतीपरमेश्वरौ वागर्थप्रतिपत्तये वन्दे।

शब्दार्थ - अहं मैं कालिदास, वागर्थौ इव = शब्द और अर्थ के समान, सम्पृक्तौ = नित्य सम्बद्ध, जगतः = संसार के, पितरौ = माता और पिता, पार्वतीपरमेश्वरौ = पार्वती और शिव को, वागर्थप्रतिपत्तये = शब्दार्थ के ज्ञान के लिए, वन्दे = प्रणाम करता हूँ।

अनुवाद मैं कालिदास शब्द और अर्थ के सामान नित्य सम्बद्ध जगत् के माता-पिता पार्वती और परमेश्वर शिव को शब्दार्थ के ज्ञान के लिए प्रणाम करता हूँ।

रघुवंशम्

सन्धि-

वागर्थाविव वगर्थौ + इव (अयादि सन्धि)

वागर्थप्रतिपत्तये वाक् + अर्थप्रतिपत्तये (जश्त्व सन्धि)

समास

पितरौ - माता च पिता च पितरौ (एकशेष द्वन्द्व समास)

पार्वतीपरमेश्वरौ - पार्वती च परमेश्वरश्च पार्वतीपरमेश्वरौ (द्वन्द्व समास)

वागर्थप्रतिपत्तये - वाक् च अर्थश्च वागर्थौ तयोः प्रतिपत्तिः तस्यै। (द्वन्द्व समास)

छन्द - अनुष्टुप्

लक्षणम् - श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम् ।

द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ।।

अनुष्टुप् या श्लोक के प्रत्येक पाद में 8 अक्षर होते हैं। इसमें षष्ठ अक्षर सदा गुरु होता है और पंचम अक्षर सदा लघु। द्वितीय और चतुर्थ चरण में सप्तम अक्षर लघु होता है और प्रथम तथा तृतीय चरण में गुरु होता है। अन्य अक्षर लघु या गुरु हो सकते हैं।

विशेष साहित्य परम्परा में ग्रन्थ के प्रारम्भ में मंगलाचरण करने की परम्परा है। मंगलाचरण तीन प्रकार के होते हैं 1. नमस्कारात्मक, 2. वस्तुनिर्देशात्मक एवं 3. आशीर्वादात्मक । महाकवि कालिदास ने अपने रघुवंशम् महाकाव्य के प्रारम्भ में नमस्कारात्मक मंगलाचरण किया है। ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिये उन्होंने जगत् के माता-पिता शिव एवं पार्वती को प्रणाम किया है। परम्परा में भगवान् शिव को ज्ञान का अधिष्ठाता माना जाता है।

ज्ञान के लिये शिव की ही उपासना करने का विधान है 'ज्ञानमिच्छेत् महेश्वरात्' । मनीषियों के अनुसार शब्द की समग्र सम्पत्ति पार्वती के अधीन है। अशेष शब्दराशि को पार्वती ही धारण करती हैं तथा अर्थरूप समग्र जगत् को भगवान् शंकर धारण करते हैं। अतः शब्द और अर्थ की सम्यक् प्रतिपत्ति के लिये शिव और पार्वती की उपासना करनी चाहिये-

शब्दजातमशेषं तु धत्ते शर्वस्य वल्लभा ।

अर्थरूपं यदखिलं धत्ते मुग्धेन्दुशेखरः ।।

इसलिये कालिदास ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में शब्दार्थ की प्रतिपत्ति के लिये शिव और पार्वती को नमस्कार किया है।

अलंकार - 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ में उपमान वागर्थों से उपमेय पार्वतीपरमेश्वरौ का सम्पृक्तत्व रूप साधर्म्य वर्णित होने के कारण उपमा अलंकार है।

इसका लक्षण - 'साम्यमन्येन वर्णयस्य वाच्यं चेदेकदोपमा' है।

सूर्यवंश का प्रभाव तथा कवि की विनम्रता -

क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः ।

तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् । |2 ||

प्रसंग - प्रस्तुत पद्य में महाकवि कालिदास ने विनम्रता व्यक्त करते हुये महान् सूर्यवंश के समक्ष अपनी बुद्धि को स्वल्पविषया बताकर उस वंश का वर्णन करने में अपने को असमर्थ बताया है।

अन्वयः - सूर्यप्रभवः वंशः क्व, अल्पविषया मतिः च क्व, मोहात् दुस्तरं सागरम् उडुपेन तितीर्षुः अस्मि ।

शब्दार्थ - सूर्यप्रभवः = सूर्य है कारण जिसका, वंशः = कुल, क्व कहाँ, अल्पविषया = अल्प विषय को जानने वाली, मति = बुद्धि, क्व = कहाँ, दुस्तरम् = पार करने में दुष्कर, सागरम् = सागर को, मोहात् = अज्ञानता से, उडुपेन = छोटी नाव से, तितीर्षुः = तैरने की इच्छा वाला, अस्मि= हूँ।

अनुवाद - सूर्य से उत्पन्न होने वाला कुल कहाँ और अल्प विषय को जानने वाली मेरी बुद्धि कहाँ? फिर भी मैं अत्यन्त कठिन सागर को अज्ञानतावश छोटी नाव से पार करने का इच्छुक हूँ, अर्थात् जैसे छोटी नाव से अगाध सागर को पार करना अत्यन्त कठिन है, उसी प्रकार मेरी स्वल्प विषयों को समझने वाली बुद्धि से महान् सूर्य वंश का वर्णन कर पाना अत्यन्त दुष्कर है।

सन्धि -

चाल्पविषया - च + अल्पविषया (दीर्घ सन्धि)

तितीर्षुर्दुस्तरम् - तितीर्षुः + दुस्तरम् (विसर्ग सन्धि)

उडुपेनास्मि - उडुपेन + अस्मि (दीर्घ सन्धि)

समास-

सूर्यप्रभवः - सूर्यः प्रभवो यस्य सः (बहुव्रीहि समास)

अल्पविषया - अल्पो विषयो यस्याः सा (बहुव्रीहि समास)

रघुवंश

कालिदास

विशेष सूर्यवंशी राजाओं के परम पवित्र चरित्र का वर्णन करने के लिये महाकवि कालिदास रघुवंश महाकाव्य की रचना के लिये उद्यत हैं। यह वंश सूर्य से उत्पन्न परम तेजस्वी वंश है। इसमें महाराज मनु, दिलीप, रघु, अज, दशरथ और राम जैसे पराक्रमी और यशस्वी राजा हुये हैं जिनका यश तथा धर्म समग्र भूमंडल में व्याप्त है। ऐसे राजाओं के वर्णन के लिये जिस सामर्थ्यवती मनीषा की आवश्यकता होती है, वह मुझमें नहीं है। रघुवंश यश और कीर्ति की लहरों से लहराता हुआ महान् समुद्र की भाँति है और मेरी स्वल्प विषया मति छोटी नौका के

समान है। जिस प्रकार छोटी नौका से महान् समुद्र को नहीं पार किया जा सकता उसी प्रकार स्वल्प विषया मति से रघुवंश का वर्णन भी असम्भव है। कवि ने रघुवंश के उत्कर्ष का कथन अपनी कृति की उत्कृष्टता के लिये किया है तथा अपनी बुद्धि को स्वल्प विषया कहकर अपनी विनम्रता द्योतित की है।

मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम् ।
प्रांशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः ।।3।।

प्रसंग - प्रस्तुत श्लोक में कालिदास ने सूर्यवंश का वर्णन सफलतापूर्वक न कर पाने के अनन्तर अपने को अपयश का पात्र बताने का उपक्रम किया है।

अन्वयः - मन्दः कवियशः प्रार्थी प्रांशुलभ्ये फले लोभात् उद्बाहुः वामन इव उपहास्यतां गमिष्यामि ।

शब्दार्थ - मन्दः = मूढ, कवियशःप्रार्थी = कवि के यश को प्राप्त करने के इच्छुक, प्रांशुलभ्ये = उन्नत पुरुष द्वारा प्राप्त करने योग्य, फले फल में, लोभात् = प्राप्ति के इच्छा से, उद्याहुः = ऊपर उठाये हाथ वाले, वामनः = बौने पुरुष के, इव = समान, उपहास्यताम् = उपहास की पात्रता को, गमिष्यामि = प्राप्त करूँगा।

अनुवाद - मैं मूर्ख हूँ और कवि के यश को प्राप्त करने का इच्छुक हूँ। ऐसा मैं कालिदास उन्नत पुरुष के द्वारा प्राप्त करने योग्य फल की ओर लोभ से ऊपर हाथ उठाये हुए बौने व्यक्ति के समान उपहास का पात्र बनूँगा।

सन्धि –

गमिष्याम्युपहास्यताम् - गमिष्यामि + उपहास्यताम् (यण सन्धि)

लोभादुद्बाहुः - लोभात् + उद्बाहुः (जश्त्व सन्धि

उद्बाहुरिव - उद्बाहुः + इव (विसर्ग सन्धि)

समास -

कवियशःप्रार्थी - कवीनां यशः कवियशः तत् प्रार्थयते तच्छीलः (तत्पुरुष समास)

प्रांशुलभ्ये - प्रांशुना लभ्यः तस्मिन् (तत्पुरुष समास)

विशेष - प्रतिपाद्य वस्तु के महत्त्व और उसकी महिमा का प्रतिपादन कर कवि अपने प्रबन्ध के महत्त्व को द्योतित करते हैं। कालिदास का प्रतिपाद्य रघुवंश है। जिसके बारे में उन्होंने स्वयं बताया है कि यह वंश सूर्य से उत्पन्न है। सूर्य स्वयं समस्त भुवनों को प्रकाशित करते हैं, अतः उनके वंश का महान् होना स्वाभाविक है। एक तो सूर्य से उत्पन्न वंश, दूसरा मैं।

उसके वर्णन को उद्यत स्वल्प बुद्धि वाला मन्द, मूर्ख होकर भी काव्यनिर्माण से प्राप्त होने वाले यश को पाने का इच्छुक हूँ। ऐसे में मेरी गति उस बौने के समान है जो उन्नत पुरुष द्वारा प्राप्त करने योग्य ऊँचे पेड़ में लगे फल को तोड़ने की इच्छा से हाथ ऊपर उठा रहा हो। ऐसे व्यक्ति की दशा को देखकर लोग उस पर हँसते हैं। मेरी भी वही गति होगी।

1. तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः ' -रघुवंशेऽयं पद्यांशः केन सम्बद्धः ?

(a) श्रीरामेण

(b) रघुणा

(c) अजेन

(d) दिलीपेन

2. "दीपशिखा" विरूदेन विभूषित: कवि

(a) भास:

(b) कालिदास:

(c) अश्वघोष:

(d) माघ:

3. रघुवंश' में कुल कितने सर्ग हैं?

(a) पन्द्रह

(b) सत्रह

(c) उन्नीस

(d) तेरह

4. गङ्गा-यमुना के सङ्गम का वर्णन प्राप्त होता है

(a) माघकृत शिशुपालवध में

(b) कालिदासकृत रघुवंश में

(c) भासकृत प्रतिमानाटक में

(d) भवभूतिकृत उत्तररामचरित में

5. रघुवंशमहाकाव्य किसकी स्तुति से प्रारम्भ होता है?

(a) गणेश-लक्ष्मी की

(b) शिव-पार्वती की

(c) विष्णु-लक्ष्मी की

(d) सरस्वती की

6. 'एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः'
इति सूक्तिः अस्मिन् काव्ये उपलभ्यते-

(a) कुमारसम्भवे

(b) शिशुपालवधे

(c) नैषधीयचरिते

(d) किरातार्जुनीये

7. रघुवंशियों का कौन-सा कालक्रमानुसार युग्म सही है?

(a) रघु, अज, दशरथ, राम

(b) अज, दिलीप, रघु, राम

(c) दिलीप, अज, दशरथ, राम

(d) राम, दशरथ, रघु, अज

8. 'प्रतिबध्नाति हि श्रेयः कस्मेयमुक्तिः? पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'

(a) कामधेनोः

(c) दिलीपस्य

(b) नन्दिन्याः

(d) वसिष्ठस्य

9. रघुवंशे कति सर्गेषु श्रीरामकथा वर्णिता कालिदासेन

(a) अष्टसु

(b) चतुर्दशसु

(c) षट्त्सु

(d) अष्टादशसु

10. 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' - इत्यस्ति :

(a) रामायणे

(b) महाभारते

(c) रघुवंशे

(d) वेणीसंहारेक

11. 'इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे' त्वदधीना हि सिद्धयः।' इति कः कं प्रति आह?

(a) वसिष्ठः दिलीपं प्रति

(b) दिलीपः वसिष्ठं प्रति

(c) वसिष्ठः सुदक्षिणां प्रति

(d) सुदक्षिणा दिलीपं प्रति

12. "ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ त्यागे श्लाघाविपर्ययः।
गुणागुणानुबन्धित्वात् तस्य सप्रसवा इव ।।"
कस्य गुणाः श्लोकेऽस्मिन् उल्लिखिताः?

(a) रघोः

(b) समस्य

(c) अजस्य

(d) दिलीपस्य